रूसी परी कथा

अमेलिया और मछली

चित्र: एन. कोचेरगिन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

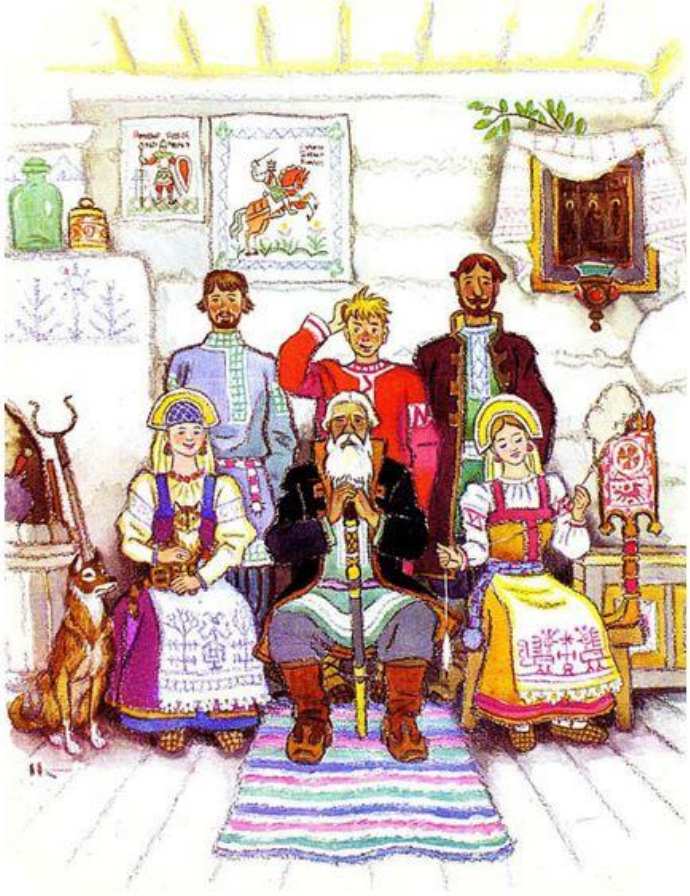

एक समय की बात है, एक बूढ़ा आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे, उनमें से दो चतुर युवक थे पर तीसरा अमेलिया एकदम मूर्ख था.

दोनों बड़े भाई हमेशा काम करते रहते थे, जबकि अमेलिया दुनिया की परवाह किए बिना पूरे दिन चूल्हे की मुंडेर पर लेटा रहता था.

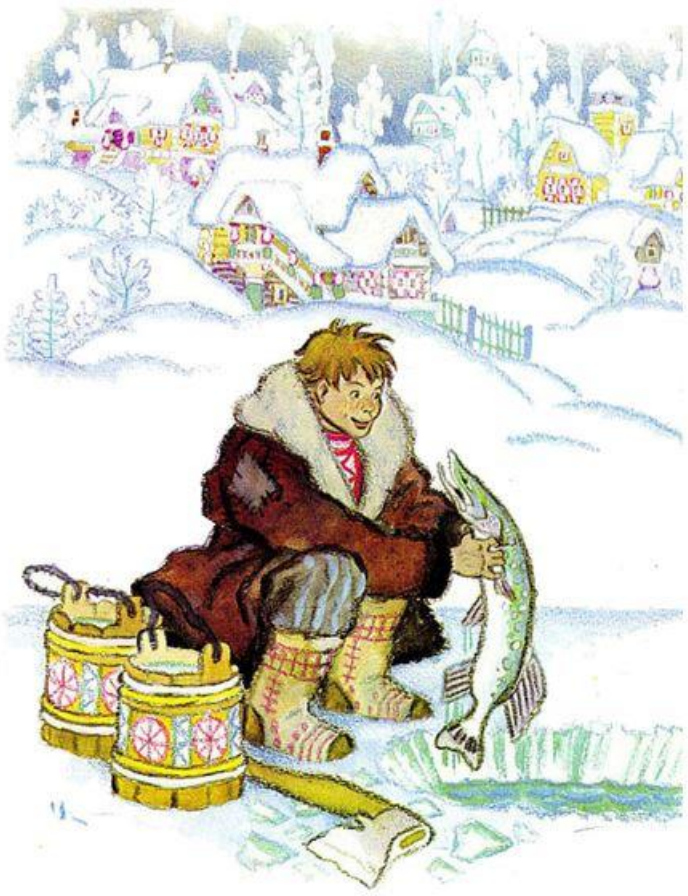

एक दिन दोनों भाई बाज़ार गए थे, तब उनकी पत्नियों ने कहा:

"जाओ और थोड़ा पानी ले आओ, अमेलिया."

फिर अमेलिया ने चूल्हे के किनारे पर लेटे हुए उत्तर दिया:

"नहीं, मेरा जाने का मन नहीं कर रहा है."

"जाओ, अमेलिया, नहीं तो तुम्हारे भाई बाज़ार से तुम्हारे लिए कोई उपहार नहीं लाएंगे."

"चलो, फिर ठीक है."

अमेलिया चूल्हे से नीचे उतरा, अपने जूते और काफ्तान पहना और दो बाल्टी और एक कुल्हाड़ी लेकर नदी की ओर चला.

उसने अपनी कुल्हाड़ी से बर्फ में एक छेद किया, दो बाल्टी पानी निकाला, बाल्टी नीचे रख दीं और फिर खुद बर्फ के छेद में देखने के लिए नीचे झुका. उसने देखा और उसने देखा और उसने क्या देखा कि पानी में एक पाइक मछली तैर रही थी. उसने जल्दी से अपना हाथ आगे बढ़ाया, और फिर पाइक मछली उसके हाथों में आ गई.

"हम आज रात के खाने में हमें कुछ बढ़िया पाइक सूप मिलेगा!" अमेलिया प्रसन्न होकर चिल्लाया.

लेकिन पाइक ने अचानक मानवीय आवाज़ में कहा:

"मुझे जाने दो, अमेलिया, फिर देखो मैं किसी दिन तुम्हारे काम आऊंगा."

उसकी बात पर अमेलिया केवल हँसा.

"मछली बताओ तुम मेरा क्या भला कर सकती हो? देखो मैं तुम्हें घर ले जाऊंगा और अपनी भाभियों से कुछ सूप बनाने के लिए कहूंगा. सुनो, मुझे पाइक का सूप बहुत पसंद है."

लेकिन पाइक उससे फिर भीख माँगने लगा और बोला:

"मुझे छोड़ दो, अमेलिया, और तुम जो चाहोगे मैं वह करूंगा."

"ठीक है," अमेलिया ने उत्तर दिया, "लेकिन केवल पहले तुम्हें यह साबित करना होगा कि तुम मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश तो नहीं कर रहे हो."

पाइक ने कहा: "मुझे बताओ कि तुम क्या चाहते हो, अमेलिया."

"मैं चाहता हूं कि मेरी बाल्टियों में से पानी की एक बूंद भी न गिरे, और वे अपने आप घर चली जाएं."

"बहुत अच्छा, अमेलिया," पाइक ने कहा, "जब भी तुम्हें कुछ चाहिए, तो तुम्हें केवल इतना कहना होगा:

"'पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूं वैसा करो', और फिर वो काम एक ही बार में पूरा हो जाएगा."

फिर अमेलिया ने कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! बाल्टियों तुम अकेले मेरे घर चली जाओ!"

और फिर देखते ही देखते बाल्टियां मुड़ीं और पहाड़ी की ओर बढ़ने लगी.

अमेलिया ने पाइक को वापस बर्फ के छेद में डाल दिया और खुद अपनी बाल्टियों के पीछे चल दिया.

गाँव की सड़क पर बाल्टियां चल रही थीं, और गाँव वाले चारों ओर खड़े होकर आश्चर्यचकित देख रहे थे, जबकि अमेलिया हँसते हुए बाल्टी के पीछे चल रहा था. बाल्टियां सीधे अमेलिया की झोपड़ी में घुस गईं और बेंच पर बैठ गईं, और अमेलिया फिर से स्टोव पर चढ़कर आराम करने लगा.

थोड़ा समय बीतने के बाद फिर उसकी भाभियों ने अमेलिया से कहा:

"तुम वहाँ क्यों लेटे हो, अमेलिया? जाओ और हमारे लिए कुछ लकड़ियाँ काटकर लाओ."

"नहीं, मेरा जाने का मन नहीं कर रहा है," अमेलिया ने कहा.

"यदि तुम वह नहीं करोगे जो हम कहते हैं, तो तुम्हारे भाई बाज़ार से तुम्हारे लिए कोई उपहार नहीं लाएंगे."

अमेलिया चूल्हे पर अपने पलंग से बाहर निकलने को तैयार ही नहीं था. उसने पाइक को याद किया और कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! जाओ कुल्हाड़ी और कुछ लकड़ी, काटो, और लकड़ी, तुम घर के अंदर आओ और चूल्हे में कूद जाओ."

और फिर कुल्हाड़ी बेंच के नीचे से निकलकर आँगन में चली गई और लकड़ियाँ काटने लगी, और लकड़ियाँ अपने आप झोपड़ी में घुस गईं और चूल्हे में कूद गईं.

फिर कुछ समय और बीता और फिर उसकी भाभियों ने अमेलिया से कहा:

"देखो घर में लकड़ियां ख़त्म हो गई हैं, अमेलिया. जाओ जंगल में जाओ और कुछ लकड़ियां काटकर लाओ."

और अमेलिया ने चूल्हे पर लोटते हुए भाभियों को उत्तर दिया:

"फिर आप यहाँ क्या काम कर रही हैं?"

"उससे तुम्हारा क्या मतलब है, अमेलिया?" महिलाओं ने कहा, "निश्चित रूप से लकड़ी लाने के लिए जंगल में जाना हमारा काम नहीं है."

"लेकिन मैं इससे ज़्यादा काम नहीं करना चाहता हूँ," अमेलिया ने कहा.

"ठीक है, फिर तुम्हें कोई उपहार नहीं मिलेगा," उन्होंने अमेलिया से कहा.

क्योंकि कोई चारा नहीं बचा था, इसलिए अमेलिया स्टोव से नीचे उतरा और उसने अपने जूते और काफ्तान पहने. वह एक लंबी रस्सी और एक कुल्हाड़ी लेकर बाहर आँगन में आया और स्लेज में चढ़कर चिल्लाया:

"द्वार खोलो, भाभी!"

फिर भाभियों ने उससे कहा:

"मूर्ख, तुम स्लेज के साथ क्या कर रहे हो? तुमने अभी घोड़े तक को जोतना नहीं आता है."

"मैं घोड़े के बिना काम कर सकता हूँ," अमेलिया ने उत्तर दिया.

भाभियों ने गेट खोला और अमेलिया ने अपनी सांसों में कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! तुम जंगल जाओ, स्लेज!"

और, देखते ही देखते स्लेज इतनी तेज़ी से गेट से बाहर निकली कि कोई घोड़े पर सवार होकर भी कोई उसे पकड़ नहीं सकता था.

अब जंगल का रास्ता एक कस्बे से होकर जाता था, और उस तेज़ रफ़्तार की स्लेज ने कई लोगों को नीचे गिरा दिया. नगरवासी चिल्लाए: "उसे पकड़ो! उसे पकड़ो!" लेकिन अमेलिया ने कोई ध्यान नहीं दिया और केवल स्लेज को तेजी से आगे बढ़ने को कहता रहा.

वह जंगल में पहुंचा, उसने स्लेज रोकी और कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूं वैसा करो! कुल्हाड़ी, कुछ सूखी लकड़ी, काटो, और तुम, लकड़ियों, स्लेज में चढ़ो और अपने आप को एक साथ बांधो."

और, देखते ही देखते कुल्हाड़ी ने सूखी लकड़ी को काटना और टुकड़े करना शुरू कर दिया, और लकड़ियां एक-एक करके स्लेज में गिरीं और वे खुद एक साथ बंध गईं. फिर अमेलिया ने कुल्हाड़ी से एक मोठे डंडे पर वार किया, जो इतना भारी था कि कोई भी उसे उठा नहीं सकता था. अमेलिया ऊपर उठा और बोला:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! तुम घर जाओ, स्लेज!"

और स्लेज वास्तव में बहुत तेजी से चली गई. अमेलिया फिर से उस शहर से गुज़रा जहाँ उसने बहुत से लोगों को मार गिराया थों, और वहाँ वे सभी लोग तैयार थे और उसका इंतज़ार कर रहे थे. उन्होंने अमेलिया को पकड़ लिया, उसे स्लेज से बाहर खींच लिया और उसे गालियां देना और पीटना शुरू कर दिया.

यह देखकर कि उसकी हालत बहुत ख़राब थी, अमेलिया ने साँस लेते हुए कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! आओ, डंडे, उन्हें अच्छी तरह से मारो!"

और फिर डंडा उछला और उसने दाएँ और बाएँ लोगों की पिटाई लगाई. शहरवासी अपने पैरों पर खड़े होकर भाग गए और अमेलिया घर चला गया और फिर से चूल्हे पर चढ़ गया.

कुछ समय के बाद ज़ार ने अमेलिया की हरकतों के बारे में सुना और उसने अपने एक अधिकारी को उसे ढूंढकर महल में लाने के लिए भेजा.

अधिकारी अमेलिया के गाँव में आया, उसकी झोपड़ी में प्रवेश किया और उससे पूछा:

"क्या तुम ही अमेलिया मूर्ख हो?"

और अमेलिया ने चूल्हे के किनारे से उत्तर दिया:

"हां, अगर मैं हूँ तो फिर क्या हुआ?"

"जल्दी से कपड़े पहनो. मैं तुम्हें ज़ार के महल में ले जाऊंगा."

"नहीं. मैं वहां नहीं जाना चाहता," अमेलिया ने कहा.

अधिकारी गुस्से में आ गया और उसने अमेलिया के चेहरे पर जोरदार थप्पड़ मारा. तुरंत अमेलिया ने अपनी सांस में कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! जाओ, डंडे, उसकी अच्छी पिटाई करो."

और फिर डंडा बाहर निकला और उसने अधिकारी को जमकर पीटा. अंत में अधिकार खुदको बड़ी मुश्किल से घसीटकर महल में वापस ले जा पाया.

ज़ार को यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि अमेलिया उसके अधिकारी से बेहतर निकला. फिर उसने अपने सबसे महान रईस को बुलाया.

ज़ार ने कहा, "एमिल्या को ढूंढो और उसे मेरे महल में लाओ अन्यथा मैं तुम्हारा सिर कटवा दूंगा."

महान रईस ने बहुत सारी किशमिश, आलूबुखारे और शहद के केक खरीदे, और उन्हें लेकर फिर वह उसी गाँव में आया और उसी झोपड़ी में गया और उसने अमेलिया की भाभियों से पूछा कि अमेलिया को सबसे ज्यादा क्या पसंद था.

"अमेलिया को प्यार से बात करना पसंद है." उन्होंने कहा, "फिर आप जो चाहेंगे वह करेगा, बशर्ते कि आप उसके साथ नम्र रहें और उसे उपहार में एक लाल कफ्तान देने का वादा करें."

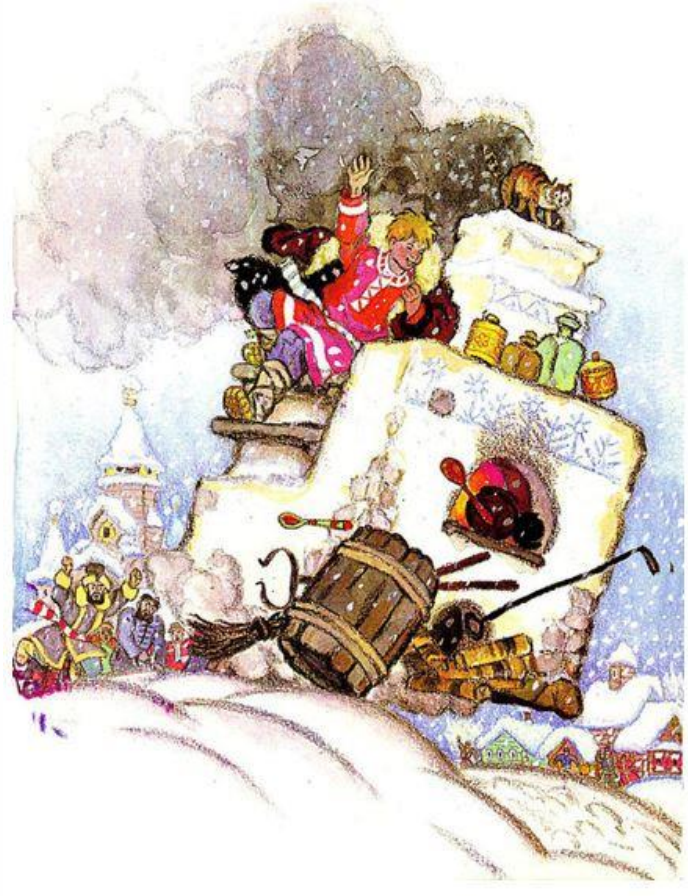

तब महान रईस ने अमेलिया को अपने साथ लाए किशमिश, आलूबुखारे और शहद के केक दिए और कहा:

"कृपया, अमेलिया, तुम चूल्हे की मुंडेर पर क्यों लेटे हो? मेरे साथ ज़ार के महल में चलो."

अमेलिया ने उत्तर दिया, "मैं जहां हूं, मैं वहां बहुत खुश हूं."

"आह, अमेलिया, ज़ार तुम्हें मिठाइयाँ और बढ़िया चीज़ें खिलाएगा. चलो महल में चलो."

"मैं वहां नहीं जाना चाहता," अमेलिया ने उत्तर दिया.

"लेकिन, अमेलिया, ज़ार तुम्हें उपहार के रूप में एक बढ़िया लाल काफ्तान, एक टोपी और एक जोड़ी जूते देगा."

अमेलिया ने कुछ देर सोचा और फिर उसने कहा:

"तो ठीक है, मैं आऊंगा. केवल तुम्हें अकेले ही आगे बढ़ना होगा और मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे चलूंगा."

रईस चला गया और अमेलिया कुछ देर तक स्टोव पर लेटा रहा और फिर बोला:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! स्टोव तुम ज़ार के महल में मुझे ले जाओ!"

और लो! झोंपड़ी की छत हिल गई, एक दीवार ढह गई और स्टोव अपने आप सड़क पर गिर गया और सीधे ज़ार के महल की ओर चला गया.

ज़ार ने खिड़की से बाहर देखा और वो आश्चर्यचकित रहा गया.

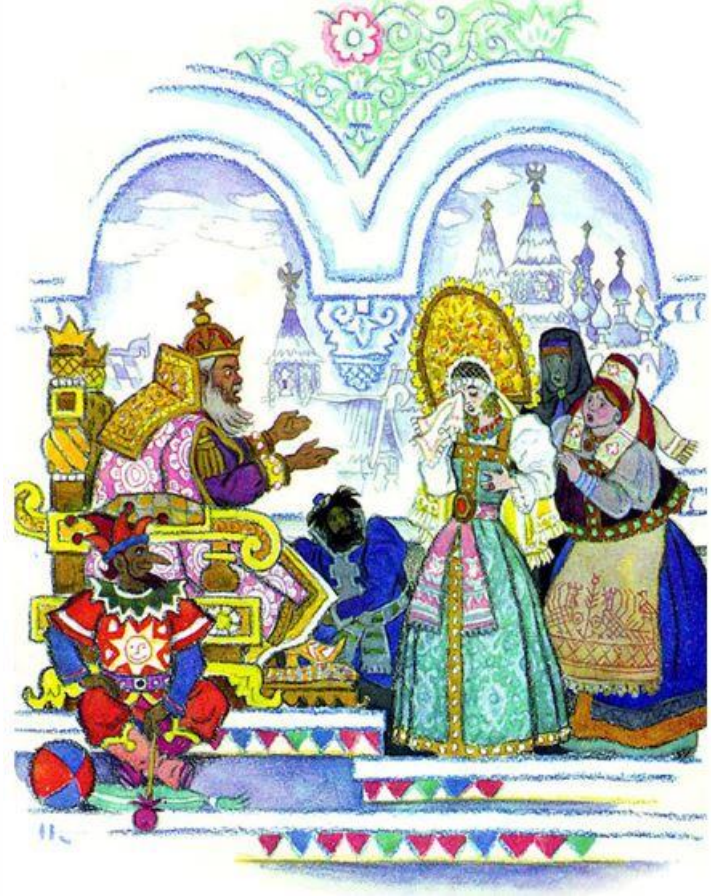

"वह क्या है?" उसने पूछा.

और महान रईस ने उत्तर दिया:

"अमेलिया अपने स्टोव पर सवार होकर आपके महल की ओर आ रहा है."

ज़ार ने अपने बरामदे में कदम रखा और कहा:

"मुझे तुम्हारे बारे में कई शिकायतें मिली हैं, अमेलिया. ऐसा लगता है कि तुमने कई लोगों को परेशान किया है."

"वे लोग मेरी स्लेज के रास्ते में क्यों आए?" अमेलिया ने पूछा.

अब, ज़ार की बेटी त्सरेवना मरिया महल की खिड़की से बाहर देख रही थी, और जब अमेलिया ने उसे देखा, तो उसने सांस लेते हुए कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! ज़ार की बेटी को मुझसे प्यार करने दो."

और उसने आगे कहा: "घर जाओ, स्टोव!"

स्टोव पलटा और सीधा अमेलिया के गाँव की ओर चल पड़ा. वह झोंपड़ी में घुस गया और वापस अपनी जगह पर बैठ गया, और अमेलिया पहले की तरह चूल्हे की मुंडेर पर जाकर लेट गया.

इस बीच, महल में आँसू और विलाप होने लगा. त्सरेवना मरिया, अमेलिया के लिए रो रही थी. उसने अपने पिता से कहा कि वह अमेलिया के बिना नहीं रह सकती थी और उसने अपने पिता से अमेलिया से शादी करवाने की विनती की. ज़ार बहुत परेशान और दुखी हुआ और उसने महान रईस से कहा:

"जाओ और अमेलिया को यहां ले आओ, चाहे वह मृत हो या जीवित. असफल मत होना, अन्यथा मैं तुम्हारा सिर कटवा दूंगा."

उस रईस ने कई प्रकार की मिठाइयाँ और मीठी मदिराएँ खरीदीं और फिर से अमेलिया के गाँव के लिए रवाना हुआ. वह उसी झोपड़ी में दाखिल हुआ और उसने अमेलिया को शाही ढंग से दावत देना शुरू की.

अमेलिया ने अच्छा भोजन किया और पेट भर शराब पी जिससे उसका दिमाग घूमने लगा. फिर वह लेटकर सो गया. उसके बाद रईस ने सोते हुए अमेलिया को अपनी गाड़ी में बिठाया और उसे ज़ार के महल में ले गया.

ज़ार ने तुरंत लोहे के घेरे से बंधा हुआ एक बड़ा बैरल लाने का आदेश दिया. अमेलिया और त्सरेवना मरिया को उसमें रखा गया और फिर बैरल को तारकोल से ढंक दिया गया और समुद्र में फेंक दिया गया.

कुछ समय बाद अमेलिया जाग गया. खुद को अंधकार में और बहुत ही सीमित जगह में पाते हुए उसने कहा:

"मैं कहाँ हूँ?"

और फिर राजकुमारी मरिया ने उत्तर दिया:

"दुखद और नीरस है हमारा भाग्य, अमेलिया मेरे प्रिय! उन्होंने हमें तारकोल वाले बैरल में डाल दिया है और नीले समुद्र में फेंक दिया है."

"और आप कौन हैं?" अमेलिया ने पूछा.

"मैं राजकुमारी मरिया हूं."

अमेलिया ने कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूं वैसा करो! आओ, जंगली हवाओं, बैरल को सूखे किनारे पर फेंक दो और पीली रेत पर उसे आराम करने दो!"

और फिर देखते ही देखते जंगली हवाएँ चलने लगीं, समुद्र अशांत हो गया और बैरल सूखे किनारे पर फेंक दिया गया और पीली रेत पर आराम करने लगा. अमेलिया और त्सरेवना मरिया बाहर निकले, और फिर त्सरेवना मरिया ने कहा:

"हम कहाँ रहेंगे, अमेलिया मेरे प्रिय? कम से कम अपने रहने के लिए एक झोपड़ी तो बनाओ."

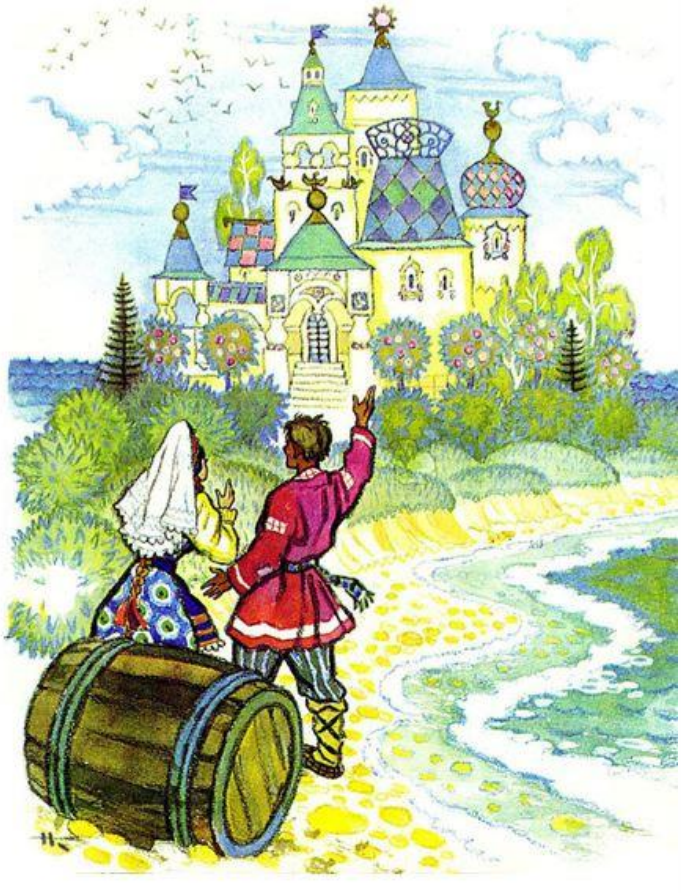

"नहीं, मैं वो नहीं चाहता," अमेलिया ने उत्तर दिया.

लेकिन राजकुमारी गिड़गिड़ाती रही और गिड़गिड़ाती रही और आख़िरकार अमेलिया ने कहा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूँ वैसा करो! सोने की छत के साथ पत्थर का एक महल बनाओ!"

और जैसे ही उसके मुंह से ये शब्द निकले, सोने की छत वाला एक पत्थर का महल उनके सामने खड़ा हो गया. उसके चारों ओर एक हरा-भरा बगीचा फैला हुआ था, जहाँ फूल खिले थे और पक्षी गा रहे थे. राजकुमारी मरिया और अमेलिया महल में गए और खिड़की के पास बैठ गए.

त्सरेवना मरिया ने कहा:

"ओह, अमेलिया, क्या तुम कुछ अधिक सुंदर नहीं बन सकते हो?"

और इस बार अमेलिया ने यह कहने से पहले ज़्यादा देर तक नहीं सोचा:

"पाइक की इच्छा से, जैसा मैं चाहूं वैसा करो! मुझे एक ऊंचे और सुंदर राजकुमार में बदल दो.“

और लो! अमेलिया एक युवा राजकुमार में बदल गया, जैसे कि भोर के आकाश में वो अब तक का सबसे सुंदर युवा पैदा हुआ हो.

लगभग उसी समय ज़ार शिकार करने गया और उसने एक ऐसा महल देखा, जो उसने पहले कभी नहीं देखा था.

"किस मूर्ख ने मेरी ज़मीन पर महल बनाने की हिम्मत की है?" ज़ार ने पूछा, और उसने यह जानने के लिए अपने दूत भेजे कि वो अपराधी कौन था.

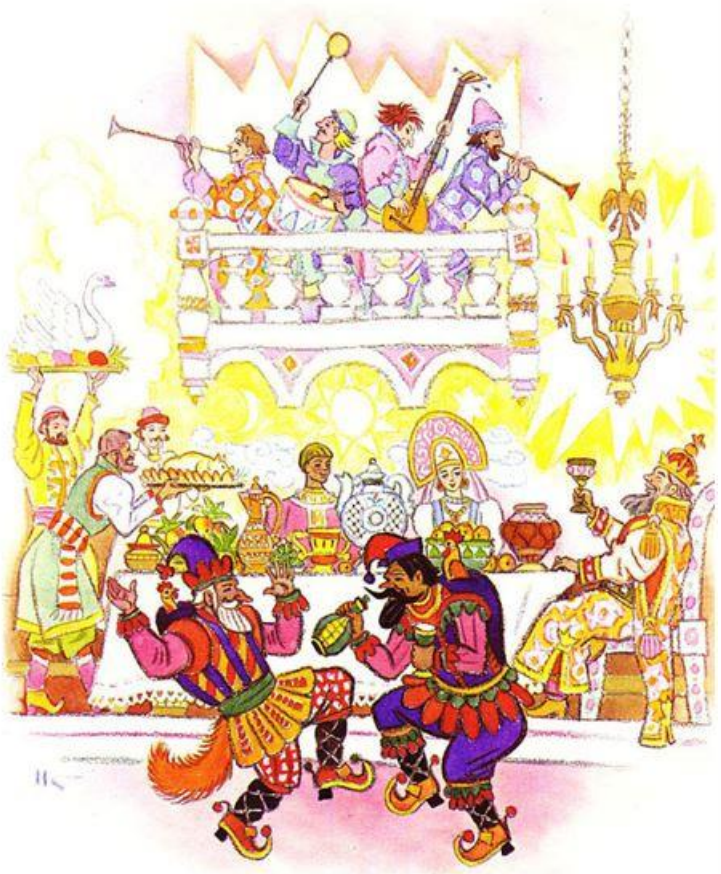

ज़ार के दूत महल की ओर भागे, खिड़की के नीचे खड़े हो गए और उन्होंने अमेलिया को बताया कि वो कौन थे.

"ज़ार से कहो कि वह खुद आकर मुझसे मिले, और वह मेरे मुंह से खुद सुने कि मैं कौन हूँ," अमेलिया ने उत्तर दिया.

ज़ार ने वैसा ही किया जैसा अमेलिया ने कहा. अमेलिया ने महल के द्वार पर ज़ार से मुलाकात की. वो उसे महल में लाया, उसे अपनी मेज पर बैठाया और उसे शाही ढंग से दावत दी. ज़ार ने खाया-पिया और वो बहुत आश्चर्यचकित हुआ.

"तुम कौन हो, मेरे अच्छे लड़के?" आख़िरकार ज़ार ने पूछा.

"क्या आपको अमेलिया मूर्ख याद है जो स्टोव के ऊपर लेटकर आपसे मिलने आया था?" अमेलिया ने कहा. "क्या आपको याद है कि कैसे आपने उसे, अपनी बेटी त्सरेवना मरिया के साथ तारकोल के बैरल में डालकर समुद्र में फेंक दिया था? ठीक है, मैं वही अमेलिया हूं. अगर मैं चाहूं, तो मैं आपके पूरे साम्राज्य में आग लगाकर उसे ख़ाक कर सकता हूं."

ज़ार बहुत भयभीत हुआ और उसने अमेलिया से उसे माफ करने की विनती की.

"तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो और तुम मेरी राजशाही भी ले सकते हो. केवल मुझे बख्श दो, अमेलिया," ज़ार ने कहा.

फिर ऐसा भव्य भोज हुआ जैसा दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा था. अमेलिया ने त्सरेवना मरिया से शादी की और राज्य पर शासन करना शुरू किया और फिर वे दोनों हमेशा खुशी-ख़ुशी रहे.

और यहीं मेरी वफ़ादार कहानी का अंत था, और जिसने उसे सुना वह मेरा अपना सच्चा दोस्त था.